संपादकीय

भारतीय आधुनिक शिक्षा की अकादमिक संपादकीय समिति की ओर से सभी पाठकों को नववर्ष की हार्दिक शुभकामनाएँ! यह नववर्ष 2021 हमारे लिए नई ऊर्जा, उत्साह एवं उमंग लेकर आया है। गत वर्ष समस्त देशवासियों ने कोविड-19 जैसी वैश्विक महामारी से बचाव पर सरकार के साथ मिलकर काम किया। इस गंभीर चुनौती को अवसर में बदला तथा भारत को वैश्विक पटल पर सम्मान देते हुए आत्मनिर्भरता की ओर बढ़ाया है। इस वर्ष की शुरुआत में ही देश ने कोविड-19 (कोरोना) का टीका विकसित कर मानवता के लिए मिसाल प्रस्तुत की।

इस महामारी के चलते सामान्य जीवन अत्यधिक प्रभावित हुआ, शिक्षा पर भी इसका विशेष प्रभाव पड़ा। इस दौरान शिक्षा पूर्णतः ऑनलाइन हो गई। शिक्षकों की कड़ी मेहनत तथा विद्यार्थियों में सीखने की ललक एवं अभिभावकों के सहयोग से ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया निरंतर चल रही है। इन कुशल शिक्षकों ने डिजिटल संसाधन सीमित होते हुए भी विद्यार्थियों को शिक्षित किया। इस दौरान ऑनलाइन शिक्षण-अधिगम को प्रत्येक बच्चे के लिए सुगम बनाने के सरल उपायों पर भी व्यापक रूप से चर्चा-परिचर्चा होती रही, ताकि कोई भी बच्चा शिक्षा की पहुँच से बाहर न रहे।

इन्हीं प्रयासों की कड़ी में भावी पीढ़ी की क्षमताओं को विकसित करने तथा परंपरागत शिक्षा को आधुनिक शिक्षा से जोड़ते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आई, जिसमें प्रत्येक बच्चे एवं युवा को समान रूप से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के अवसर सुनिश्चित करने पर बल दिया गया है। इसके लिए भावी शिक्षकों एवं सेवारत शिक्षकों की शिक्षा भी महत्वपूर्ण है। शिक्षक-शिक्षा के इन्हीं विविध सरोकारों पर आधारित लेख 'राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में शिक्षक शिक्षा — अपेक्षा, चुनौतियाँ एवं समाधान' दिया गया है।

शिक्षक, विद्यार्थियों को किस प्रकार पढ़ाएँ? और किस प्रकार की शिक्षण-अधिगम सामग्री का प्रयोग करें? यह उसकी बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी होती है। ऐसे ही सीखने में शिक्षण-अधिगम सामग्री के महत्व पर आधारित लेख 'विविध पाठ्य अभ्यास भी शिक्षण-अधिगम सामग्री हैं!' दिया गया है, जिसमें भाषा के पाठों पर निर्मित रोचक शिक्षण गतिविधियाँ शिक्षण-अधिगम सामग्री (टी.एल.एम.) का ही काम करती हैं, के बारे में बताया गया है।

विद्यार्थियों के लिए शिक्षा तभी सार्थक हो सकती है, जब उन्हें पढ़ने के लिए पर्याप्त पुस्तकें मिलें तथा वे अपनी सुविधानुसार शांति से बैठकर पढ़ सकें। इसी विषय पर लेख 'शिक्षा में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पुस्तकालय का योगदान' दिया गया है, जिसमें रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय की विद्यालयी शिक्षा में भूमिका एवं वर्तमान में पुस्तकालय के बदलते स्वरूप पर भी चर्चा की गई है।

विद्यालयी शिक्षा में पढ़ने के लिए पाठ्यपुस्तकों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है। हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता पर किए गए शोध अध्ययन पर आधारित शोध पत्र 'माध्यमिक स्तर पर हिंदी भाषा की पाठ्यपुस्तकों का निर्माण तथा शिक्षण-अधिगम की गुणवत्ता वृद्धि पर विश्लेषणात्मक अध्ययन' दिया गया है। इस शोध पत्र में विद्यार्थियों और शिक्षकों की दृष्टि से हिंदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन और पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता पर व्यापक सुझाव दिए गए हैं।

© NCERT not to be republished

साथ ही हिंदी भाषा कौशल सीखने में परंपरागत कक्षा-कक्ष प्रत्यक्ष शिक्षण के साथ-साथ ऑनलाइन शिक्षण भी आवश्यक है। अतः आधुनिक शिक्षण उपागमों से हिंदी भाषा कौशल सीखने पर शोध पत्र 'स्नातक स्तर के विद्यार्थी-शिक्षकों की हिंदी भाषा कौशल उपलब्धि के आधार पर मिश्रित शिक्षण-अधिगम उपागम की प्रभावशीलता' दिया गया है।

ऑनलाइन शिक्षण के सरोकारों तथा अनुभवों पर आधारित शोध पत्र 'ऑनलाइन शिक्षण— विद्यार्थियों के लिए सीखने के अवसरों में बढ़ता अंतर (जनपद बागेश्वर के विशेष संदर्भ में)' दिया गया है। इसी प्रकार गणित विषय का ऑनलाइन माध्यम से शिक्षण एक बड़ी चुनौती है। शिक्षकों का इस प्रकार के शिक्षण पर क्या दृष्टिकोण है और उन्हें किस प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा? इसके साथ ही उसके क्या समाधान होने चाहिए, के सभी पहलुओं पर विस्तार से चर्चा शोध पत्र 'कोविड-19 महामारी के दौरान ऑनलाइन गणित शिक्षण पर शिक्षकों का दृष्टिकोण, बाधाएँ तथा समाधान' में की गई है।

भारत सरकार एवं राज्य सरकारों ने भी शिक्षण-अधिगम को सुगम बनाने के लिए अनेक आई.सी.टी. आधारित शैक्षिक योजनाओं की शुरुआत की। इन योजनाओं के क्रियान्वयन से पहले विद्यार्थियों के डिजिटल उपकरण संबंधित दक्षता अर्थात् डिजिटल साक्षरता की जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'डिजिटल साक्षरता कौशल उपलब्धि परीक्षण का निर्माण एवं मानकीकरण' दिया गया है। आज के आधुनिक समय में गांधीजी के विचार एवं उनकी मूल्य आधारित शिक्षा की प्रासंगिकता बनी हुई है, जो भावी समाज का नव-निर्माण करने में बहुत उपयोगी है। गांधीजी के इसी दृष्टिकोण को व्यापक रूप में लेख 'महात्मा गांधी की शिक्षा दृष्टि और उसकी प्रासंगिकता' में दिया गया है।

बच्चों के विकास की अवस्था में किशोरावस्था का विशेष स्थान है, जिसमें उनका मानसिक, भावनात्मक एवं शारीरिक विकास होता है। यह अवस्था किशोरियों के लिए और अधिक महत्वपूर्ण हो जाती है। इसी पर आधारित शोध पत्र 'ग्रामीण किशोरियों के लिए किशोरावस्था शिक्षा — समस्याएँ एवं समाधान' दिया गया है, जिसमें किशोरियों की किशोरावस्था की विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान दिया गया है।

यह सत्य है कि शिक्षा ने आज शहरी एवं ग्रामीण परिवेश को विकसित करने में सार्थक भूमिका निभाई है। भारतीय गाँवों में हुए बदलावों को व्यापक रूप में प्रस्तुत करता लेख 'शिक्षा और गाँव का बदलता परिदृश्य' दिया गया है, जबकि शोध पत्र 'देह-व्यापार से जुड़ी महिलाओं के बच्चों की शिक्षा का अध्ययन' दिया गया है, जिसमें देह-व्यापार में संलिप्त महिलाओं के बच्चों के भविष्य के प्रति सपनों, उन्हें अच्छा जीवन देने के लिए विद्यालय भेजने आदि पर विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है।

आप सभी की प्रतिक्रियाओं की हमें सदैव प्रतीक्षा रहती है। आप हमें लिखें यह अंक आपको कैसा लगा, साथ ही हम आशा करते हैं कि आप हमें अपने मौलिक तथा प्रभावी लेख, शोध पत्र, शैक्षिक समीक्षाएँ, श्रेष्ठ अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ, नवाचार एवं प्रयोग, विद्यालयों के अनुभव आदि प्रकाशन हेतु आगे दिए गए पते पर प्रेषित करेंगे।

अकादमिक संपादकीय समिति

© NCERT not to be republished